Q.5. कृषि के संकेन्द्रण से संबंधित वॉन थ्यूनेन के सिद्धान्त का वर्णन करें।

→ जे० एच० वॉन थ्यूनेन एक जर्मन विद्वान था। जिनका जीवन काल 1783-1850 ई० था। वे जर्मनी के मेक्लेनबर्ग में फार्म मैनेजर थे। उन्होंने 1826 ई० में कृषि भूमि उपयोग से संबंधित एक स्थानियकरण सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, यही वॉन थ्यूनेन का कृषि के स्थानियकरण का सिद्धान्त कहलाता है। इनका सिद्धान्त इस बात पर निर्भर था कि किस क्षेत्र में किस मैं किस फसल का उत्पादन किया जाए कि जिससे कृषकों को अधिकतम लाभ मिल सके। यह सिद्धान्त किसी प्रदेश में उत्पन्न की जाने वाली फसलों के तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत है। यह सिद्धान्त प्रत्येक देश में फसल उत्पादन के विशेषीकरण पर बल देता है। जिसके की अधिकतम लाभ की प्राप्ती हो सके।

वॉन थ्यूनेन ने अपने सिद्धान्त को लागु करने के लिए कुछ मान्यताओं का सहारा लिया था जो निम्नलिखित हैं —

(i) वॉन थ्यूनेन ने एक ऐसे प्रदेश की कल्पना की जिसके केन्द्र में एक ही नगर स्थित हो।

(ii) नगर के चारो ओर विस्तृत कृषि क्षेत्र हो जहां ग्रामिण आबादी रहती हो

(iii) उस प्रदेश का भूतल सर्वत्र समान हो तथा पुरे प्रदेश में समान भौतिक दशाएँ पाई जाती हो

(iv) केन्द्रिय नगर उस प्रदेश में उत्पन्न होने वाली फसलों का एक मात्र बाजार हो।

(v) ग्रामिण अंचल के कृषक नगर की मांग के अनुसार फसलों में हेर फेर कर सके

(vi) प्रदेश में परिवहन साधन के नाम पर सिर्फ घोड़ा गाड़ी

Scanned with CamScanner

उपलब्ध हों।

वॉन थ्यूनेन के अनुसार इस प्रकार के प्रदेश में केन्द्रिय नगर के चारों ओर 6: संकेन्द्रिय वृतों के रूप में कृषि पट्टी का विस्तार होगा।

(i) नगर के समिपस्थ वृत में शाक-सब्जी व दुग्ध उत्पादन होगा।
(ii) दूसरे वृत खंड में ईंधन की लकड़ी का उत्पादन होगा
(iii) तीसरे वृत खंड में अन्न का उत्पादन होगा
(iv) चौथे वृत खंड में अनाज का उत्पादन होगा।
(v) पाँचवें वृत में भी अनाज का उत्पादन किया जाएगा पर 33% भूमि परती छोड़ दी जाएगी।
(vi) अन्त के छठे वृत में माँस व दुग्ध प्राप्ती हेतु पशु-पालन किया जाएगा।

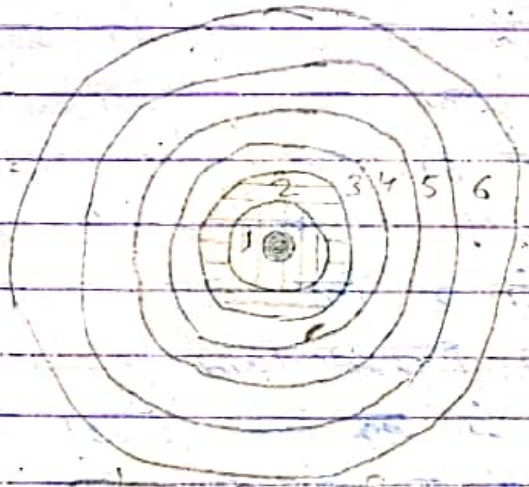

INDEX

● = केन्द्रिय नगर
1 = बागवानी
2 = ईंधन
3 = अन्न
4 = अनाज
5 = अनाज + परती
6 = पशुपालन

वॉन थ्यूनेन का कृषि स्थानिकाकरण का सिद्धान्त

इस प्रकार के प्रदेश में कृषकों को होने वाले लाभ को वॉन थ्यूनेन ने निम्न सूत्र के माध्यम से दर्शाया है।

$$P = S - (E + T)$$

जहाँ

P = कृषक को फसल बेचने से लाभ

S = फसल का विक्रय मूल्य

E = उत्पादन लागत

T = परिवहन लागत

वॉन थ्यूनेन का यह सिद्धान्त नागरीय व ग्रामिण दोनों भूमि उपयोगों में लागू हो जाता है। इनके अनुसार ग्रामिण भूमि उपयोग के भी दो पहलु है। कृषक द्वारा भूमि उपयोग एवं गाँव द्वारा भूमि उपयोग। कृषक किसी खेत में श्रम व पूंजी की उतनी ही मात्रा प्रयोग करता है, जितनी कि उसे सीमांत उपज मिल जाए। अपनी इन्हीं खुबियों के कारण यह सिद्धान्त CENTRAL PLACE THEORY भी कहलाता है।

<u>आलोचना</u> :- वॉन थ्यूनेन के सिद्धान्त की आलोचना मुख्यतः इस आधार पर की जाती है कि उनके द्वारा कल्पित मान्यताएँ ऐसी हैं जो वास्तविक जगत में नहीं मिलती हैं। इस सिद्धान्त की प्रमुख आलोचनाएँ निम्नलिखित हैं —

(i) एकाकी राज्य की मान्यता जिसमें केवल एक नगर हो और उसके चारो ओर विस्तृत कृषि प्रदेश हो महज कोरी कल्पना ही प्रतित होती है।

(ii) विभिन्न क्षेत्रों का उत्पादन सिर्फ एक ही राज्य को भेजा जाना तर्कसंगत प्रतित नहीं होता है।

(iii) किसी राज्य में सर्वत्र भौतिक दशाएं समान होना मुश्किल है

(iv) कृषक अपनी सुविधा अनुसार परिवहन के अन्य साधनों का प्रयोग न करे यह संभव नहीं है।

(v) खाद्यानों की अपेक्षा ईंधन को अधिक महत्व देना अब संगत नहीं रहा।

वॉन थ्यूनेन का यह सिद्धांत कृषि भूमि उपयोग के क्षेत्र में एक मिल का पत्थर माना जाता है। इस सिद्धान्त ने भूगोलविदों को भूमि उपयोग के विश्लेषण हेतु एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान किया। अपने अभूतपूर्व योगदान हेतु यह सिद्धान्त सदा याद रखा जाएगा।